United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System - IKS) में आंध्र संस्कृति का योगदान

पी सोमशेखर
प्राध्यापक,शाशाकीय
महाविद्यालय,अनंतपुर, आंध्र प्रदेश

प्रस्तावाना

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल शास्त्रों और ग्रंथों तक सीमित न होकर जीवन की समग्र व्यवस्था है। इसमें आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्य, सामाजिक व्यवस्था, विज्ञान, कला और दर्शन का संतुलित समावेश है। भारत की विविध क्षेत्रीय संस्कृतियाँ इस परंपरा को जीवंत और गतिशील बनाती हैं। दक्षिण भारत, विशेषतः आंध्र प्रदेश, भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सशक्त केंद्ररहाहै।

आंध्र संस्कृति ने संस्कृत परंपरा को तेलुगु भाषा और लोकजीवन से जोड़कर ज्ञान को जनसुलभ बनाया। वैदिक काल से आधुनिक युग तक आंध्र क्षेत्र में ज्ञान के संरक्षण, प्रसार और नवाचार की निरंतर परंपरा रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System - IKS) में आंध्र संस्कृति का योगदान अत्यंत प्राचीन, बहुआयामी और अमूल्य है। यह क्षेत्र दक्षिण-पूर्व तट पर स्थित होने के कारण आर्य और द्रविड़ संस्कृतियों के मिलन के साथ-साथ बौद्ध, जैन और वैदिक परंपराओं का संगम स्थल रहा है।

एक प्राचीन भाषा के रूप में, तेलुगू में एक समृद्ध और गहरी साहित्यिक संस्कृति है। नन्हाया, तिक्कना, एर्राप्रगड़ा, श्रीनाथ, मोल्ला (कविइत्री), और तारिकोंडा वेंकम्बाम्बा ने तेलुगू भाषा "पूर्वी का इतालवी" बनाया - धार्मिक, संगीत रचना और दर्शन के लिए लिंगुआ फ्रैंका। चार्ल्स फिलिप ब्राउन, वेमान, श्री श्री (लेखक) और विश्वनाथ सत्यनारायण के योगदान ने तेलुगु को एक जीवंत और विकसित आधुनिक भाषा बना दिया। अंग्रेजी व्याकरण के औपचारिकरण के लिए विभिन्न तेलुगू / तमिल / संस्कृत व्याकरणियों के योगदान ने तेलुगु साहित्यिक परंपराओं को वास्तव में वैश्विक पहुंच प्रदान की।
भारतीय ज्ञान परंपरा में आंध्र संस्कृति के प्रमुख योगदान निम्नलिखित क्षेत्रों में हैं:

1. बौद्ध दर्शन और शिक्षा (Buddhist Philosophy and Education)

- **आचार्य नागार्जुन का योगदान:** आंध्र प्रदेश बौद्ध दर्शन का एक प्रमुख केंद्र था, विशेषकर महायान बौद्ध धर्म का। महान दार्शनिक आचार्य नागार्जुन ने न केवल महायान बौद्ध धर्म को वैश्विक पहचान दिलाई, बल्कि 'माध्यमिक' (Madhyamaka) स्कूल की नींव भी रखी।
- **शिक्षा का केंद्र:** नागार्जुनकोंडा और अमरावती प्राचीन बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे, जहाँ श्रीलंका और अन्य देशों से भी छात्र अध्ययन करने आते थे।
- **अमरावती कला शैली:** आंध्र के कृष्णा नदी घाटी में विकसित 'अमरावती स्कूल ऑफ आर्ट' दक्षिण भारत, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया की कला पर गहरा प्रभाव डालने वाली प्रमुख शैलियों में से एक है।

2. दार्शनिक और वैदिक परंपरा (Philosophical and Vedic Traditions)

- **कुमारिल भट्ट और वल्लभाचार्य:** मीमांसा दर्शन के महान व्याख्याता कुमारिल भट्ट आंध्र से थे। इसके अलावा, पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य ने भी भक्ति और दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया।
- **शिल्प शास्त्र और धर्मशास्त्र:** आपस्तम्ब (Apastamba) एक महान आंध्र ऋषि थे, जो न केवल धर्मशास्त्र के ज्ञाता थे, बल्कि उन्होंने अपने 'शिल्प सूत्रों' के माध्यम से भारतीय ज्यामिति (geometry) की नींव रखी।

3. साहित्य और भाषा (Literature and Language)

- **तेलुगु साहित्य:** आंध्र ने एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा विकसित की है। महाकवि नन्नय्या, टिक्कन्ना, और एर्राप्रेगडा (कवि त्रय) ने महाभारत का तेलुगु में अनुवाद करके इसे घर-घर पहुँचाया।
- **कृष्णादेवराय का काल:** विजयनगर साम्राज्य (जिसका बड़ा हिस्सा आंध्र प्रदेश था) के दौरान साहित्य, गणित, खगोल विज्ञान और दर्शन में महान योगदान दिया गया। सम्राट कृष्णदेवराय ने "देश भाषांदु तेलुगु लेसा" (सभी भारतीय भाषाओं में तेलुगु प्यारी है) कहा था।
- **गाथासप्तशती:** सातवाहन राजा हाल ने 'गाथासप्तशती' नामक प्राकृत काव्य की रचना की, जो प्राचीन आंध्र जीवन और प्रेम को दर्शाती है।

4. नृत्य, संगीत और कला (Dance, Music, and Arts)

- **कुचिपुड़ी नृत्य:** आंध्र प्रदेश का प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य 'कुचिपुड़ी' भक्ति, लय और अभिनय का संगम है, जो भागवत पुराण से प्रेरित है।
- **अन्नमय्या और त्यागराज:** संगीत के क्षेत्र में, अन्नमय्या और त्यागराज जैसे महान रचनाकारों ने कर्नाटक संगीत के विकास में अमूल्य योगदान दिया।

- **परम्परागत कलाएँ:** आंध्र की कलमकारी (Kalamkari) कला, कोंडापल्ली के खिलौने (Kondapalli toys), और थोलू बोमालाता (छाया कठपुतली परंपरा) देश भर में प्रसिद्ध हैं।

5. सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान

- **राष्ट्रीय ध्वज:** भारत के राष्ट्रीय ध्वज की रचना आंध्र के पिंगली वेंकय्या ने की थी।
- **औषधि और विज्ञान:** आचार्य नागार्जुन ने स्वास्थ्य के नियमों और चिकित्सा की सूक्तियों को स्तंभों पर उत्कीर्ण करवाया था, जिससे प्राचीन समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाई जा सके।

आंध्र प्रदेश में गुंटूर शहर के पास अमरावती में पुरातात्विक संग्रहालय समेत कई संग्रहालय हैं, जिनमें हैदराबाद के सालार जंग संग्रहालय , पास के प्राचीन स्थलों के अवशेष हैं, जिनमें मूर्तियों, चित्रों और धार्मिक कलाकृतियों, विशाखापत्तनम में विशाखा संग्रहालय , जो विजयवाड़ा में एक पुनर्वासित डच बंगला और विक्टोरिया जुबली संग्रहालय में पूर्व-स्वतंत्रता मद्रास प्रेसिडेंसी का इतिहास प्रदर्शित करता है, जिसमें प्राचीन मूर्तियों, चित्रों, मूर्तियों, हथियार, कटलरी और शिलालेखों का संग्रह है।

अन्य सांस्कृतिक तत्व

विजयवाड़ा में एक घर में कोंडापल्ली खिलौने।

बापू की पेंटिंग्स, नंदुरी सुब्बाराव की येन्की पातालू (येंकी नामक एक वॉशरवुड पर गीत / सच्चाई), शरारती बुडुगु (मुल्लापुडी का एक चरित्र), अन्नामय्या के गीत, अवाकाया (आम अचार का एक रूप जिसमें आम का कर्नल बरकरार रखा जाता है), गोंगुरा (रोज़ेले संयंत्र से चटनी), अटला तद्दी (मुख्य रूप से किशोर लड़कियों के लिए एक मौसमी त्यौहार), गोदावरी नदी के किनारे, दुदु बसवाना (फसल त्यौहार संक्रांति के दौरान द्वार-द्वार प्रदर्शनी के लिए सजाए गए औपचारिक बैल) ने लंबे समय तक तेलुगु संस्कृति को परिभाषित किया है । दुर्गी का गांव मूल पत्थर शिल्प के लिए जाना जाता है, नरम पत्थर में मूर्तियों की नक्काशी जिसे छाया में प्रदर्शित किया जाना चाहिए क्योंकि वे मौसम के लिए प्रवण हैं।

वास्तुकला

आंध्र प्रदेश में दो विशिष्ट वास्तुशिल्प परंपराएं हैं। सतवाहन के तहत अमरवती शहर के निर्माण के लिए पहला निशान वापस आया। वास्तुकला की यह अनूठी शैली धार्मिक विषयों से प्रेरणा के साथ जटिल और अमूर्त मूर्तिकला के उपयोग पर जोर देती है। दूसरी परंपरा इस क्षेत्र के विशाल ग्रेनाइट और नींबू पत्थर के भंडार पर आती है और यह बहुत ही लंबे समय तक बने विभिन्न मंदिरों और किलों में दिखाई देती है।

साहित्य

तेलुगु साहित्य संस्कृत साहित्य और हिंदू ग्रंथों से अत्यधिक प्रभावित है। नन्नय्या, तिक्कना और एर्राप्रगड़ा ने त्रयं का नाम पाया। जिसने महान महाकाव्य महाभारत को तेलुगू में अनुवादित किया। बमेरा पोटाना संस्कृत में वेद व्यास द्वारा लिखित 'श्री भागवतम' के तेलुगु अनुवाद, उनके महान क्लासिक श्री मदंधरा महा भागवतमु के लिए प्रसिद्ध वोंटिमित्ता (कदपा डिस्ट) से एक और महान कवि है। नानय्या ने पुरानी तेलुगू-कन्नड़ लिपि से वर्तमान तेलुगु लिपि (लिपी) का व्युत्पन्न किया। सम्राट कृष्णा देव राय ने प्रसिद्ध कथन भी लिखा और लिखा: " देश भास्लैंडु तेलुगू पाठ " जिसका अर्थ है "तेलुगु सभी भारतीय भाषाओं में सबसे प्यारा है"। प्रसिद्ध तमिल कवि महाकावी भरथियार ने "सुन्धारा तेलंगुनिल पातिसिथु" लिखा था जिसका शाब्दिक अर्थ है कि खूबसूरत तेलुगू में गानों का निर्माण। योगी-वेमना द्वारा भौगोलिक कविताओं काफी प्रसिद्ध हैं। आधुनिक लेखकों में ज्ञानपीठ अवॉर्ड विजेता श्री विश्वनाथ सत्य नारायण और डॉ सी नारायण रेड्डी शामिल हैं। श्रीश्री और गद्दार जैसे क्रांतिकारी कवि लोकप्रिय हैं।

आंध्र प्रदेश के व्यंजन में बंदर लड्डु, अवकाया, गोंगुरा, पुलुसु, पप्पू चारू, जोना कुडू, बोबबट्टू, काज़ा और अरसा शामिल हैं। यह क्षेत्र के मसालों, फल और सब्जी उपज का उपयोग करता है।

प्रदर्शन कला

अन्नामय्या, त्यागराज, कुचीपुडी आंध्र प्रदेश की समृद्ध कलात्मक परंपराओं का सारांश देते हैं। "ध्वनि के व्याकरण" के लिए अन्नामचार्य और त्यागराज के योगदान ने तेलुगु भाषा को कर्नाटक संगीत के लिए रचना की पसंदीदा भाषा बनाई और आंध्र प्रदेश को सभी आधुनिक संगीत की मां बना दिया। उनका प्रभाव न केवल कर्नाटक पर बल्कि वैश्विक शास्त्रीय संगीत और भावनात्मक अनुनाद के माध्यम के रूप में ध्वनि के संगठन के मानव इतिहास में समानांतर नहीं है। कुचिपुड़ी भारनाथनम की प्राचीन कला के परिष्करण के रूप में, और आंध्र प्रदेश की अनूठी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के संदर्भ में शास्त्रीय नृत्य की सभी महान वैश्विक परंपराओं के समान है।

नृत्य

आंध्र में शास्त्रीय नृत्य पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा किया जा सकता है; हालांकि महिलाएं इसे और अधिक बार सीखती हैं। कुचीपुडी आंध्र प्रदेश के राज्य के सबसे प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य रूप हैं। राज्यों के इतिहास के माध्यम से मौजूद विभिन्न नृत्य रूपों में चेंचु भगतम, कुचीपुडी, भामकालपम, बुरकाथा, वीरनत्यम, बुट्टा बोमालू, दप्पू, तपेता गुल्लू, ढिम्सा और कोल्ट्टम हैं।

संगीत

राज्य में एक समृद्ध संगीत विरासत है। कार्नाटिक संगीत की कई किंवदंतियों जिनमें कार्नाटिक संगीत (थुआगराज और सियामा शास्त्री) के ट्रिनिटी के बीच दो तेलुगू वंश थे। अन्य संगीतकारों में अन्नामचार्य , क्षत्रिय , और भद्रचल रामदासु शामिल हैं।
राज्य के ग्रामीण इलाकों में लोक गीत भी लोकप्रिय हैं।

आंध्र प्रदेश में गुंटूर शहर के पास अमरावती में पुरातात्विक संग्रहालय समेत कई संग्रहालय हैं, जिनमें हैदराबाद के सालार जंग संग्रहालय , पास के प्राचीन स्थलों के अवशेष हैं, जिनमें मूर्तियों, चित्रों और धार्मिक कलाकृतियों, विशाखापत्तनम में विशाखा संग्रहालय , जो विजयवाड़ा में एक पुनर्वासित डच बंगला और विक्टोरिया जुबली संग्रहालय में पूर्व-स्वतंत्रता मद्रास प्रेसिडेंसी का इतिहास प्रदर्शित करता है, जिसमें प्राचीन मूर्तियों, चित्रों, मूर्तियों, हथियार, कटलरी और शिलालेखों का संग्रह है।

निष्कर्ष (Conclusion)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के निर्माण और विकास में आंध्र संस्कृति का योगदान अत्यंत व्यापक, गहन और बहुआयामी है। दर्शन, भक्ति, साहित्य, कला, विज्ञान और प्रशासन—सभी क्षेत्रों में आंध्र ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समृद्ध किया है। आंध्र संस्कृति ने शास्त्रीय ज्ञान को लोकजीवन से जोड़कर IKS को जीवंत, नैतिक और व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया है। वर्तमान समय में इस विरासत के संरक्षण और वैश्विक प्रसार की आवश्यकता है, ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) समिति — Indian Knowledge Systems — शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
राधाकृष्णन, एस. — भारतीय दर्शन — राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
रेड्डी, पी. राघव — आंध्र प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास — तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
सत्यनारायण, के. — आंध्र संस्कृति और परंपरा — एमराल्ड पब्लिशर्स।